कक्षा-6
हिन्दी - बाल रामकथा
सीता की खोज
(अनुखंड-2)

प्रस्तुतकर्ता : चेतराम वर्मा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय-4,मुंबई

सीता की खोज

राम का दुख लक्ष्मण से देखा नहीं जा रहा था । उनका व्यवहार सहन नहीं हो रहा था । वह राम के निकट गए । विलाप करते राम ने कहा, “मैं सीता के बिना नहीं रह सकता । लक्ष्मण, तुम अयोध्या लौट जाओ । मैं वहाँ नहीं जाऊँगा । यहीं प्राण दे दूँगा । मैं सीता के साथ आया था । उसके बिना कैसे लौटूँगा ? नगरवासियों को क्या मुँह दिखाऊँगा ? तुम जाओ । मुझे यहीं छोड़ दो ।”

सीता की खोज

“आप आदर्श पुरुष हैं । आपको धैर्य रखना चाहिए। इस तरह दु:ख से कातर नहीं होना चाहिए । हम मिलकर सीता की खोज करेंगे । वे जहाँ भी होंगी, हम उन्हें ढूँढ़ निकालेंगे । सीता हमारी प्रतीक्षा कर रही होंगी ।” लक्ष्मण ने उन्हें ढाढ़स बँधाते हुए कहा । राम शांत हुए । पर थोड़ी ही देर में “हा प्रिये !” कहते हुए पुन: विलाप करने लगे ।

सीता की खोज

इसी बीच आश्रम के आसपास भटकने वाला हिरणों का एक झुंड राम-लक्ष्मण के निकट आ गया । राम को लगा कि हिरण सीता के बारे में जानते हैं। उन्हें कुछ बताना चाहते हैं । “हे मृग ! तुम्हीं बताओ सीता कहाँ है ?” राम ने पूछा । हिरणों सिर उठाकर आसमान की ओर देखा और दक्षिण दिशा की ओर भाग गए । राम ने संकेत समझ लिया । उन्होंने लक्ष्मण से कहा “हमें सीता की खोज दक्षिण दिशा में ही करनी चाहिए, क्योंकि हिरण उसी ओर गए हैं ।”

सीता की खोज

वन में भटकते हुए उन्होंने एक टूटे हुए रथ के टुकड़े देखे । मरा हुआ सारथी और मृत घोड़े भी थे। “वन में रथ का क्या प्रयोजन ? उसके टूटने का क्या अर्थ ?” राम असमंजस में पड़ गए । “लगता है थोड़ी देर पहले यहाँ संघर्ष हुआ है,” लक्ष्मण ने कहा । यह पुष्पमाला वही है, जिसे सीता ने वेणी में गूँथ रखा था । निश्चित तौर पर सीता राक्षसों के चंगुल में फँस गई है । यह माला संघर्ष के दौरान वेणी से टूट कर गिरी होगी ।”

सीता की खोज

“पर यह रथ कैसे टूटा ?” राम सोचने लगे । सीता के संघर्ष से यह नहीं टूट सकता । अवश्य किसी ने राक्षसों को चुनौती दी होगी । उनसे युद्ध किया होगा । वहाँ से थोड़ी ही दूर राम ने पक्षीराज जटायु को देखा । वह लहूलुहान था और उसके पंख कटे हुए थे । अंतिम साँसे गिनते हुए जटायु बोला “हे राजकुमार ! सीता को रावण उठा ले गया है । मेरे पंख उसी ने काटे । सीता का विलाप सुनकर मैंने रावण को चुनौती दी ।

सीता की खोज

उसका रथ तोड़ दिया । सारथी और घोड़ों को मार डाला । स्वयं रावण को घायल कर दिया । पर मैं सीता को नहीं बचा सका । रावण उन्हें लेकर दक्षिण-पश्चिम दिशा की ओर उड़ गया ।" यह कहते-कहते जटायु ने प्राण त्याग दिए ।

राम ने आगे बढ़ने से पहले जटायु की अंतिम क्रिया की । वे सोचते और पछताते रहे । "यह कैसा विधान है ! मैं तो कष्ट में हूँ ही । मेरी सहायता करने वालों को भी इतना कष्ट !" राम की आँखें नम हो आई । उन्होंने जटायु को अंतिम बार प्रणाम किया ।

सीता की खोज

जटायु ने सीता के बारे में महत्वपूर्ण सूचना दी थी। रावण का नाम बताया । दिशा बताई, जिधर सीता को लेकर वह गया । राम जटायु की चिता के पास में खड़े थे । “यह समय विलाप करने का नहीं है । हमें तुरंत दक्षिण-पश्चिम दिशा की ओर जाना चाहिए । सीता उधर ही होंगी,” लक्ष्मण ने तत्परता दिखाई ।

सीता की खोज

आगे का मार्ग और कठिन था । राम और लक्ष्मण को लगभग हर दिन राक्षसी आक्रमणों से जूझना पड़ा । अनेक कठिनाइयाँ आईं । अवरोध मिले । दोनों राजकुमार प्रत्येक बाधा को पार करते चले गए । उनके सामने लक्ष्य स्पष्ट था । दिशा तय थी । उन्हें कोई नहीं रोक सकता था । वन-मार्ग जितना कठिन होता गया, उनकी दृढ़ता बढ़ती गई।

सीता की खोज

शब्दार्थ

निकट = पास

विलाप = रोना

धैर्य = धीरज

कातर = भयभीत

प्रतीक्षा = इंतज़ार

मृग = हिरण

वेणी = बालों की चोटी

चुनौती = ललकार

प्राण त्यागना = मर जाना

सीता की खोज

अभ्यास-प्रश्न

प्रश्न-1 हिरणों ने किस प्रकार सीताजी के बारे में रामजी को संकेत दिया?

प्रश्न-2 सीता को वन में ढूँढ़ते हुए राम क्या देख कर असमंजस में पड़ गए?

प्रश्न-3 रथ के पास राम को सीता की कौन सी वस्तु मिली?

प्रश्न-4 राम ने टूटे हुए रथ से थोड़ी दूरी पर क्या देखा?

प्रश्न-5 जटायु ने सीता के बारे में कौन सी महत्वपूर्ण सूचना दी थी?

प्रश्न-6 जटायु की अंतिम क्रिया किसने की?